डॉ. विजय मिश्र

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत १८ बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : १८०, बेडफोर्ड रोड, लिंकन, एमए. ईमेल : misra.bijoy@ gmail.com

विमर्श

लोकाचार और वैदिक धर्म

बर्फानी देश बोस्टन में अभी बसन्त का आगमन हुआ है। फूल फिर खिलने लगे हैं। रामजी का जन्मदिन मनाया गया। यह खोजने और अंदाज़ लगाने के बीच की बात है कि रामजी की जन्मतिथि कवि वाल्मीकि को कैसे ज्ञात हुई?

पहले आलेख में मैंने वाल्मीकि के विचार से वशिष्ठ और विश्वामित्र के बाद के प्रसंग पर टिप्पणी दी थी। विश्वामित्र तप और साधन में जुड़े रहते हैं, वशिष्ठ वेद आधारित मार्ग में विश्वास रखते हैं। वाल्मीकि की रामायण में वशिष्ठ की विजय होती है। रामजी वशिष्ठ के शिष्य हैं, वह भी वेद मार्ग पर चलने में यकीन रखते हैं। हालांकि किसी भी पूर्व निर्धारित मार्ग पर चलना कभी भी आसान नहीं होता। विचलन की सम्भावना तो हमेशा ही मौजूद रही आती है, लेकिन रामजी का एकनिष्ठ एवं दृढ़ चरित्र स्थिर बना रहता है। यही कारण है कि वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाते हैं। हम उनके चरित्र का आदर करते हैं। रामजी जैसा आज्ञाकारी पुत्र होने की नज़ीर दी जाती है कि अगर बेटा हो तो रामजी जैसा।

विश्वामित्र के विचार को हम लोकाचार के नाम से आख्यायित करेंगे। वेद प्रचार के पहले भारत वर्ष की सभ्यता को 'लौकिक' नाम से कहा गया है। वाल्मीकि ने इसे अपनी ज़मीन में बोया और इस संस्कृति को प्राकृत ने से पुकारा। कृषिकारी लोगों में अपनी ज़मीन ही सम्पत्ति होती है। अपने हाथ पर आदमी सदा विश्वास रखता है। सूरज, पानी, पहाड़, पेड़, साँप आदि का सदियों से मनुष्य का गहरा रिश्ता रहा है। अपने प्रयास से आदमी दूर तक देख सकता है। अपने हाथ के बल से पशुओं से लड़ता है, फसल उगाता है, धातु से घर जोड़ता है, अपनी कुटी बनाता है, प्रकृति की गोद में अपनी मर्जी से ज़िंदगी बिताता है।

यह प्राकृत संस्कृति अभी भी भारत के पहाड़ी इलाकों में मौजूद है। उनके प्रचलन में अब भी जो तमाम साधन मौजूद हैं उन पर किसी ने उतना ध्यान नहीं दिया है। गोरे साहिबों ने उनको आदिवासी नाम की संज्ञा बना कर उन्हें तथाकथित तौर पर जंगली कहा है। लेकिन भारत वर्ष की अनेक सामाजिक पद्धतियों में उन तथाकथित जंगल में रहने वाले लोगों की परम्पराएँ सदियों से मौजूद रही आयी हैं। उन लोगों की भाषा है, लेकिन लेख नहीं है। उनका निर्णय ऋषियों ने वेद में शामिल किया है और वेद के माध्यम से इस संस्कृति का आभास हमको मिलता है।

> रामजी वशिष्ठ के शिष्य हैं, वह भी वेद मार्ग पर चलने में यकीन रखते हैं। हालांकि किसी भी पूर्व निर्धारित मार्ग पर चलना कभी भी आसान नहीं होता। विचलन की सम्भावना तो हमेशा ही मौजूद रही आती है, लेकिन रामजी का एकनिष्ठ एवं दृढ़ चरित्र स्थिर बना रहता है। यही कारण है कि वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाते हैं।

मनुष्य का मन सबसे प्रधान अंग है। इसका आविष्कार इन लोगों ने किया था। मन को एकाग्र रखने से काम में सिद्धि मिलती है। यह इन लोगों की विशिष्ट शिक्षा थी। इस एकाग्रता को वेद ने ध्यान की आख्या दी है। सच्चे दिमाग से तीर चलाने से शत्रु के ऊपर विजय हासिल की जा सकती है। अभ्यास से दिमाग की एकाग्रता बढ़ सकती है। सभी कार्य की सिद्धि के लिये जोर से अभ्यास करना चाहिये। यह है लोकाचार की शिक्षा।

इस लोकाचार संस्कृति में सभी के ऊपर माँ होती थी। काम की सफलता के लिये माँ की पूजा करनी चाहिये, बलि चढ़ानी चाहिये। माँ की कृपा से अपना मंगल होता है और माँ के रोष से हमारी सफाई हो जाती है। माँ के प्रसाद से हम काफी तकलीफों का सामना कर सकते हैं, जीवन में सुख ला सकते हैं। इन लोगों की संस्कृति व्यावहारिक थी, इसमें प्रकृति थी लेकिन तत्व का अभाव था।

यह रेखांकित करने जैसी बात है कि किसी को तत्व मालूम है, लेकिन एक नयी चिन्तनधारा वेद के पंडितों ने निकाली। इस चिन्तनधारा में मन की एकाग्रता को स्वीकार किया, परन्तु मन को दुनिया का निर्माता बना दिया। सभी के पीछे मन है, हमारे मन के पीछे ब्रह्माण्ड का मन है, हमारा मन उस ब्रह्माण्ड के मन का एक भाग है। तो ब्रह्माण्ड में जो कुछ होता है, हम अपने मन के बल से जान सकते हैं। सारे ब्रह्माण्ड को अपने साथ ले सकते हैं। सारे ब्रह्माण्ड की शक्ति के प्रभाव से हमारी सारी तकलीफ दूर हो सकती है। बस हमारा मन और ब्रह्माण्ड के मन में कुछ संपर्क जुड़ जाये।

इस सम्पर्क को ब्रह्मा के नाम से बताया गया है। ब्रह्मा ब्रह्माण्ड के मन के पुत्र हैं और उनके आशीर्वाद से ब्रह्माण्ड में सब कुछ बनता है। आदमी के साधन को वह पसन्द करते हैं और सिद्धियां प्रदान करते हैं लेकिन जो उनको मानता है उनके ऊपर ब्रह्मा जी का आशीर्वाद सदैव रहता है। ऐसे कई ब्रह्म हैं और कई तत्व है, यह वेद की गंभीर पढ़ाई से आदमी को मालूम होता है, इसमें विश्वास लाने में काफी समय लगता है। इस विश्वास को वैदिक धर्म कहा गया है और जिनको यह पूरी तरह मालूम हो उनको हम ब्रह्मर्षि मानते हैं। ब्रह्मर्षि पद में पहुँचना ब्रह्मा का आशीर्वाद ही है।

लोकाचार की माँग के अनुरूप वैदिक धर्म के देवताओं की उपयोगिता में परिवर्तन हो गये। माँ धरती में थी, देव आसमान और उसके ऊपर कहीं जगह पर रहते हैं। माँ खाना देती थी तो कब महामारी से मारती थी, देवता सिद्धियां देते हैं और कभी शाप भी। वैदिक धर्म आचरण में अगर किसी ने गड़बड़ी की तो देवताओं का शाप आता था। शाप मौत के लिये नहीं है, लेकिन तड़पाने के लिये है, मनुष्य की तपस्या देवताओं में थरथराहट ला सकती तो देवता कूटनीति का

वेद की शिक्षा को प्रमाणित करना वाल्मीकि की कहानी है। सभी घटनायें कुछ न कुछ कारण हैं, वह कारण दैव से जुड़ा हुआ है। सभी देवताओं की करामात से दैव बनता है। यह मत पूछो कि क्यों हुआ। आगे देखो कि अपना कर्तव्य क्या है, जो वेद बोलता है वही करो, इससे आप दैव को सम्मान करते हैं।

सहारा लेकर आदमी की परीक्षा लेते हैं और अक्सर ही उसे फेल करके अपने को सम्हालते हैं। जबकि सचाई पर डटे रहने के कारण मनुष्य को सत्यवान कहा गया है। वेद का मार्ग ही सत्य है।

वेद की शिक्षा को प्रमाणित करना वाल्मीकि की कहानी है। सभी घटनायें कुछ न कुछ कारण हैं, वह कारण दैव से जुड़ा हुआ है। सभी देवताओं की करामात से दैव बनता है। यह मत पूछो कि क्यों हुआ। आगे देखो कि अपना कर्तव्य क्या है, जो वेद बोलता है वही करो, इससे आप दैव को सम्मान करते हैं। दैव को कोई खण्डन नहीं कर सकता। अगर किसी ने किया उसकी गति भ्रष्ट है, उसको मृत्यु के पश्चात शान्ति नहीं मिलेगी, भाग्य ही अपनी डोरी है। सभी अपना-अपना भाग्य लेकर दुनिया में पैदा होते हैं, अपनी स्तुति वेद के माध्यम से करते चलो, भाग्य को सम्मान करो, सिद्धि मिलेगी, सुख मिलेगा।

समाज के लोग वैदिक धर्म से विश्वास रखते हैं, परन्तु लोकाचार से चलते हैं। वैदिक मार्ग में चलना आसानी नहीं है। जो चलते हैं, वह महात्मा हो जाते हैं। वैदिक मार्ग में चलने वालों का हम सम्मान करते हैं। वाल्मीकि की रामायण इस सम्मान के लिये हमारे मन में आस्था लाती है, हमको पता चलता है कि यही रास्ता है, रामजी कर पाये, हम नहीं कर पाते। हम उनकी कहानी को सुनते हैं, समझते हैं, लेकिन किसी लड़के ने अगर रामजी की तरह घर-द्वार छोड़ने की कोशिश की तो हमीं हैं जो उसके इस कृत्य के विरोध में खड़े हो जाते हैं। तो यही हमारी दुविधा भी है कि सिद्धांत के तौर पर हम रामजी के चरित्र को पसन्द करते हैं, लेकिन व्यवहारिक तौर पर उसे नकार देते हैं।

इस कहानी में राजा दशरथ के चरित्र का विश्लेषण आगामी कड़ी में किया जायेगा। ■